The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 11 | November 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

सिंगापुर में प्रवासी भारतीय- ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ० अनूप सिंह कुशवाहा

स्वतंत्र शोधार्थी, anoopsingh499@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17922591

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 23-11-2025

Published: 10-12-2025

Keywords:

प्रवासी, नृजाति, प्रवासन, उपनिवेश, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी, चेट्टीयार

ABSTRACT

सिंगापुर में प्रवासी भारतीय समुदाय सिंगापुर की कुल जनसंख्या का लगभग 09% के करीब हैं तथा सिंगापुर की तीसरी सबसे बड़ी नृजाति समूह भी है। सिंगापुर में प्रवासी भारतीयों का अस्थाई प्रवासन पूर्व मध्यकाल से ही होता रहा है। भारतीय व्यापारी वर्ग चेट्टियार, मलाया प्रायद्वीप में व्यापार के लिए तामसीक (सिंगापुर) के समुद्री तट पर लंगर डालते थे। लेकिन आधुनिक सिंगापुर में भारतीयों का प्रवासन ब्रिटिश शासन के कारण संभव हुआ। अंग्रेजों द्वारा भारतीयों को मजदूरी, पहरेदारी तथा घरेलू काम करने इत्यादि के लिए ले जाया जाता था। वर्तमान में भारत से प्रवासन करने वाले ज्यादातर उत्प्रवासी उच्च शिक्षित व विशेष कौशलयुक्त पेशेवर कर्मचारी हैं। जो सिंगापुर की अर्थव्यवस्था, राजनीति, व्यापार, संस्कृति, समाज में पूरी तरह से घुलमिल गए है। इस शोध पत्र में सिंगापुर में बसे भारतीय समुदाय का अध्ययन करेंगे।

अध्ययन का उद्देश्य

1. सिंगापुर में भारतीय प्रवास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (1819 से वर्तमान तक) को समझना, जिसमें मजदूर, व्यापारी, सैनिक और पेशेवर वर्ग की भूमिका का विश्लेषण शामिल हो।

2. यह जानना कि प्रवासी भारतीयों ने सिंगापुर की सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक संरचना को किस प्रकार प्रभावित और समृद्ध किया।

3. सिंगापुर के आर्थिक विकास में भारतीय प्रवासियों की भूमिका को समझना, जैसे श्रमिक योगदान, व्यापार, उद्यमिता और आज के तकनीकी व कॉर्पोरेट क्षेत्रों में उनकी भागीदारी।

4. प्रवासी भारतीय समुदाय ने भारत और सिंगापुर के द्विपक्षीय संबंधों को किस प्रकार प्रभावित किया, इसका अध्ययन करना।

5. यह विश्लेषण करना कि भारतीय प्रवासी अपनी सांस्कृतिक पहचान, भाषा, धर्म और परंपराओं को किस प्रकार संरक्षित रखते हैं और उन्हें किन सामाजिक, आर्थिक या राजनीतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

6. वर्तमान वैश्वीकरण के दौर में प्रवासी भारतीयों की भूमिका को समझना और यह देखना कि वे सिंगापुर और भारत दोनों के विकास में कैसे सेतु का कार्य कर रहे हैं।

शोध परिकल्पना

1. सिंगापुर के विकास में 19वीं शताब्दी से ही भारतीय प्रवासियों ने आधारभूत भूमिका निभाई है, और आज भी उनकी उपस्थिति सामाजिक-आर्थिक जीवन का अभिन्न हिस्सा है।

2. प्रवासी भारतीयों ने सिंगापुर में रहते हुए अपनी भाषा, धर्म और परंपराओं को संरक्षित रखा है और साथ ही स्थानीय संस्कृति के साथ एक संस्कृति-समन्वय भी विकसित किया है।

3. भारतीय प्रवासी समुदाय ने श्रमिक वर्ग से लेकर आधुनिक पेशेवर और उद्यमिता तक, सिंगापुर की अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

4. सिंगापुर में भारतीय प्रवासी समुदाय भारत और सिंगापुर के द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने में सॉफ्ट पावर के रूप में कार्य करता है।

5. भारतीय प्रवासी समुदाय को सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, फिर भी वे शिक्षा, संगठन और धार्मिक संस्थाओं के माध्यम से अपनी पहचान को जीवित रखते हैं।

अनुसंधान पद्धति

यह अध्ययन मानता है कि सिंगापुर में भारतीय प्रवासियों ने विभिन्न चरणों में वहाँ की अर्थव्यवस्था, राजनीति और समाज में अपनी अहम भूमिका निभाई है। उनका योगदान व्यापार, श्रम

शक्ति, प्रशासन, कला, संगीत, और शिक्षा के क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। वहीं इस शोध के लिए प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया जाएगा, जिसके अंतर्गत सरकारी दस्तावेज एवं जनगणना रिपोर्ट, प्रवासी भारतीयों के साक्षात्कार, संग्रहालयों एवं ऐतिहासिक अभिलेखों का अध्ययन किया जाएगा साथ ही द्वितीयक स्रोत के रूप में ऐतिहासिक ग्रंथ एवं शोध पत्र, सिंगापुर में भारतीय प्रवासियों पर प्रकाशित रिपोर्ट, समाचार पत्र एवं डिजिटल संसाधन का अध्ययन किया जाएगा।

मूल आलेख

भारतीयों का प्रवासन का इतिहास प्राचीन काल से रहा है। पश्चिम एशिया हो या दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में (मलाया, वर्मा, स्वर्णभूमि, कंबोज इत्यादि) में भारतीय व्यापारियों का दल, हिन्दू व बौद्ध भिक्षु, दार्शनिक भारतीय शासकों जैसे चोल, शैलेन्द्र इत्यादि शासकों का दक्षिण-पूर्व एशिया में साम्राज्य विस्तार रहा है।[1] भारत और मलाया प्रायद्वीप के मध्य सामुद्रिक व्यापार प्राचीन काल से चला आ रहा है। लेकिन 14वीं शताब्दी में इसमें परिवर्तन देखने को मिला। अभी तक भारतीय व्यापारी मलाया में अस्थाई रूप से बसे थे, लेकिन अब वहाँ स्थाई रूप से बसने लगे तथा स्थानीय समुदायों (जैसे- जावानेस, चीनी, मल्या तथा बतिक) के साथ वैवाहिक संबंध बनाने लगे। इनसे पैदा हुई संताने चेट्टि या हिन्दू पर्राकान्स कहलाये।[2] इसकी पुष्टि बानुआ केलिंग साम्राज्य की पांडुलिपि 'सुलालत अल-साल्तीन', 'हिकायत हांग-तुआ' तथा 'हिकायत राजा पसाई' में मिलती है।[3] तत्कालीन समय में मलक्का सल्तनत में भारतीय व्यापारियों के तीन दल काम कर रहे थे। पहला, हिन्दू व्यापारिक समूह; दूसरा, गुजराती मुस्लिम, जिन्हें मूर्स कहा जाता था तथा तीसरा, तमिल मुस्लिमों का समूह।[4]

भारतीय व्यापारियों का व्यापार मलक्का प्रायद्वीप के अलावा दक्षिण-पूर्व एशिया के अन्य देशों के साथ भी होता था। जिसके लिए मलक्का स्ट्रीट से होकर गुजरना पड़ता था। इसी स्ट्रीट में एक छोटा सा टापू तामसीक (वर्तमान में सिंगापुर) स्थित है, लेकिन भौगोलिक रूप से महत्वपूर्ण होने के कारण उसे मलक्का स्ट्रीट में व्यापारिक जहाजों का विश्राम स्थल भी कहा जाता है। भारतीय व्यापारी यहाँ अपनी जहाजों के साथ डेरा डालते थे। तामसीक का महत्व मध्यकाल के साथ-साथ ब्रिटिश उपनिवेशिक काल में भी बना रहा। इस समय तामसीक के साथ भारत तथा भारतीयों से संबंध और भी गहराई से जुड़ गया। भारत में शासन करने वाली ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने जौहर सुल्तान हुसैन शाह से संधि (06 फरवरी, 1819) कर तामसीक (सिंगापुर) में व्यापारिक बंदरगाह निर्माण करने तथा व्यापार करने का अधिकार प्राप्त कर लिया। इस संधि में मुख्य भूमिका निभाने वाले ब्रिटिश अधिकारी सर स्टैम्फ़र्ड रैफ़ल्स (Stamford Raffles) ने आधुनिक सिंगापुर की नींव रखी।[5] सर स्टैम्फ़र्ड रैफ़ल्स ने न केवल सिंगापुर में बंदरगाह का निर्माण कराया बल्कि उसे आधुनिक शहर के रूप में विकसित भी किया। इन्होंने सभी

नृजाति समूहों के लिए अलग-अलग कालोनी विकसित किए, स्कूल व कॉलेज का निर्माण, यूरोपीय शैली में सड़क निर्माण, सरकारी भवन, कर्मचारियों के लिए भवन तथा एक बाजार विकसित किए।[6] इस निर्माण कार्य के लिए कामगारों की कमी को पूरा करने के लिए भारत से मजदूरों, सिपाहियों, बंदियों, कामगारों इत्यादि को ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के द्वारा ले जाया जाने लगा। चूंकि वर्ष 1819 से 1867 तक सिंगापुर का ब्रिटिश प्रशासन ईस्ट इंडिया कंपनी के कलकत्ता कार्यालय से प्रशासित होता था।[7] इसलिए भारतीयों को वहाँ ले जाना और भी आसान था। ब्रिटिश अधिकारी सर स्टैम्फ़र्ड रैफ़ल्स के साथ बंगाल नेटिव आर्मी (इन्फैन्ट्री) के 120 सिपाहियों का पहला जत्था वर्ष 1819 में सिंगापुर की धरती पर कदम रखा। इन सिपाहियों के साथ घरेलू कार्य कार्य करने वाले धोबी, दूधवाला, नौकर इत्यादि भी साथ गए।[8] इसके बाद भी कई जत्थों में भारत से हजारों मजदूरों तथा कैदियों को काम करने के लिए सिंगापुर ले जाया गया। वर्ष 1836 में सिंगापुर में प्रवासी भारतीय मजदूरों की संख्या लगभग 2157 के करीब थी, जो वर्ष 1860 तक बढ़कर 12973 तथा वर्ष 1893 तक 51019 तक पहुँच गई।[9] इन मजदूरों को कैनाल, पत्तन, रोड, भवन निर्माण इत्यादि कार्यों में लगाया जाता था।[10]

इनके अलावा सिंगापुर जाने वाला भारतीयों का तीसरा समूह पंजाबी सिपाहियों का था। जिन्हें ब्रिटिश शासन द्वारा अपनी सुरक्षा के लिए ले जाया गया। पंजाबी सिपाहियों के लिए ब्रिटिश शासन द्वारा सिंगापुर में सिख पुलिस कांस्टेबल (एस०पी०सी०) का गठन 26 मार्च, 1881 को किया गया। इसी के तहत पंजाबी सिपाहियों के पहले 54 सदस्यीय दल को सिंगापुर ले जाया गया। जिसमें बैलगाड़ी चलाने वाले, सुरक्षा गार्ड, पुलिस इत्यादि शामिल थे। वर्ष 1898 तक पंजाबी सिपाहियों की संख्या बढ़कर 300 के करीब पहुँच गई।[11] 20वीं शताब्दी तक बड़ी संख्या में प्रवासी भारतीय सिंगापुर में प्रवासन कर चुके थे। ये विभिन्न सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि तथा क्षेत्र से आते थे। इनमें मजदूर, सिपाही, क्लार्क, बैंकर, व्यापारी इत्यादि शामिल थे।

प्रवासी भारतीयों में सामाजिक विविधता

सिंगापुर एक बहुसांस्कृतिक देश है। यहाँ सभी नृजाति समूह अपनी संस्कृति, धर्म, भाषा, रहन-सहन को बनाए रखते हुए, स्थानीय संस्कृति के साथ समन्वय कर एक साथ रह रहे हैं। संख्या में देखें तो, सिंगापुर की कुल आबादी लगभग 5.69 मिलियन के करीब है। जिसमें से 3.5 मिलियन सिंगापुर के नागरिक, 0.52 मिलियन परमानेंट रेज़िडेंस तथा 1.64 मिलियन नॉन रेजिडेंस शामिल हैं। सिंगापुर में मुख्यतः तीन बड़े नृजाति समूह है। जो कुल आबादी का लगभग 98.4% के करीब आते हैं- चीनी (75.9%), मलाया (15.0%) तथा भारतीय (7.5%) हैं।[12]

प्रवासी भारतीयों का आधुनिक सिंगापुर में प्रवासन ब्रिटिश हुकूमत के कारण 19वीं शताब्दी से ही हो रहा है। संख्या के हिसाब से देखें तो आज इनकी कुल संख्या लगभग 5.6 लाख के करीब है। जिसमें से लगभग 3.4 लाख सिंगापुर के नागरिक हैं तथा 02 लाख के करीब नॉन रेजिडेंस हैं। सामाजिक रूप से देखें तो प्रवासी भारतीयों में मुख्यतः चार भाषाई समूह हैं- तमिल (54.3%), मलयाली (7.3%), हिंदी (5.2%), पंजाबी (3.4%) तथा अन्य 29.3%।[13] भारत से सिंगापुर जाने वाले प्रवासी भारतीयों में केवल कामगार वर्ग, सिपाही तथा छोटे छोटे दुकानदार ही नहीं थे बल्कि बड़े व्यापारी समूह भी थे। जैसे- दक्षिण भारत के चेट्टियार, गुजरात के मारवाड़ी, पारसी, बंगाली व्यापारी समूह, सिन्धी व्यापारी समूह इत्यादि। वर्ष 1984 तक कुल 17 व्यापारिक समूह भारत से सिंगापुर प्रवासन किए तथा वर्ष 1860 तक तमिल, बंगाली, सिन्धी तथा पारसी व्यापारिक समूह के अपने कारखाने भी स्थापित हो चुके थे।[14]

आधुनिक सिंगापुर में चेट्टियार व्यापारिक समूह का प्रवासन वर्ष 1820 में प्रारंभ हुआ। ये मुख्यतः साहूकारी तथा बैंकिंग क्षेत्र में काम करते थे। चेट्टियारों की पहली फाइनेंस कंपनी वर्ष 1823 में शुरू हुई।[15] चेट्टियार व्यापारी बैंक तथा चीनी अफीम व्यापारियों के मध्य बिचौलिया का काम करते थे तथा अफीम के व्यापार के लिए ब्याज पर पैसे भी देते थे।[16] इन्होंने सिंगापुर बैंक तथा पेनाङ ब्रैंचेस ऑफ चार्टर्ड बैंक के साथ मिलकर सिंगापुर के बैंकिंग क्षेत्र में अपनी मजबूत पकड़ बना ली तथा वर्ष 1928 में चेट्टियार चेम्बर ऑफ कॉमर्स की स्थापना भी की।[17] पारसी समुदाय मुख्यतः स्वास्थ, समाज कल्याण तथा धार्मिक क्षेत्र में काम कर रहे हैं। मिस्त्र विंग (सिंगापुर जनरल हॉस्पिटल), दी सेंट्रल सिख गुरुद्वारा, दी कैपिटल थिएटर तथा दी श्रीनिवास पेरूमाल टेम्पल इत्यादि इन्हीं के सहयोग से बना है। वहीं, पंजाबी प्रवासी मुख्यतः टेक्सटाइल तथा फाइनेन्स के काम में लगे हैं। ये लोग भारतीय व्यापारियों के अलावा चीनी व यूरोपीय व्यापारियों को पैसा देते थे।

इनके अलावा सिंगापुर में प्रवासी भारतीयों के बहुत सारे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व क्षेत्रीय संगठन काम कर रहे हैं। जो भारतीयों को व्यवसायिक सलाह, आर्थिक सहयोग, कानूनी सहयोग, सामाजिक जगरूपता, सांस्कृतिक गतिविधियों का संचालन करते हैं, साथ ही प्रवासी भारतीयों की नई पीढ़ी को भारत तथा भारतीय संस्कृति के प्रति जागरूप भी करते हैं।[18]

सिंगापुर इंडियन एसोसिएशन

सिंगापुर इंडियन एसोसिएशन की स्थापना वर्ष 1923 में अपने सदस्यों के सामाजिक, शारीरिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक और सामान्य कल्याण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई थी। जब इसका गठन हुआ, तो एसोसिएशन ने खुद को जातीय, भाषा, धर्म, जाति या क्षेत्र आधारित संगठन के बजाय एक

अखिल भारतीय संगठन के रूप में पेश किया। एसोसिएशन सिंगापुर में ऐतिहासिक बैलेस्टियर मैदान पर स्थित है, जिसने सामुदायिक संघों और खेल क्लबों के समूह की एकाग्रता के लिए औपचारिक विरासत का दर्जा हासिल कर लिया है। अपने शुरुआती राजनीतिक झुकाव को ध्यान में रखते हुए, क्लब हाउस की आधारशिला 18 जून, 1950 को भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू द्वारा रखी गई थी। अपनी शुरुआत से ही, एसोसिएशन सिंगापुर के खेल परिदृश्य में बेहद सक्रिय रहा है। जिन खेलों में एसोसिएशन सक्रिय है उनमें क्रिकेट, टेनिस, हॉकी और फुटबॉल शामिल हैं। इसके कई सदस्य और खिलाड़ी क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंटों में सिंगापुर का प्रतिनिधित्व करने के लिए भी गए हैं।

साउथ एशियन इंटरनेशनल फ़ेलोशिप

साउथ एशियन इंटरनेशनल फ़ेलोशिप (SAIF-चर्च) की शुरुआत सिंगापुर में दक्षिण एशियाई समुदाय तक पहुँचने के लिए हुई। बहुत प्रार्थना और भगवान के दर्शन की तलाश के साथ और एक क्रॉस के आकार में सिंगापुर की पूरी भूमि के चारों कोनों से एक रणनीतिक प्रार्थना पदयात्रा के साथ, तीन परिवारों ने 31 अगस्त को पादरी प्रीतम सिंह संधू के घर में अग्रणी चर्च की शुरुआत की। दक्षिण एशियाई अंतर्राष्ट्रीय फ़ेलोशिप की शुरुआत SAIF-अंग्रेजी सेवा से हुई, जिसने SAIF-तेलुगु और SAIF-तमिल मण्डली को जन्म दिया- दोनों का लक्ष्य सिंगापुर में मुख्य रूप से ब्लू-कॉलर शिपयार्ड में काम करने वाले तेलुगु और तमिल मूल के विदेशी श्रमिकों के लिए एक साप्ताहिक इंजीलवादी मंत्रालय था।

तेलंगाना सांस्कृतिक सोसायटी (सिंगापुर)

तेलंगाना कल्चरल सोसाइटी (सिंगापुर) सिंगापुर में रहने वाले तेलंगाना के लोगों द्वारा 'ना तेलंगाना कोटि रतनाला वीणा' गीत से लोक कला जैसी तेलंगाना संस्कृति और कलाओं को संरक्षित करने के लिए स्थापित एक मंच है। इसके अलावा, तेलंगाना कल्चरल सोसाइटी (सिंगापुर) एक ऐसा स्थान है जहां बथुकम्मा, बोनालू और दशहरा जैसे त्योहारों के अलावा सभी त्योहार एक साथ मनाए जाते हैं, जो तेलंगाना में बहुत लोकप्रिय हैं और संस्कृति की जीवनरेखा हैं। यह एक गैर-लाभकारी संगठन है, जो निस्वार्थ भाव से अपने सभी सदस्यों के साथ त्योहारों, नृत्यों, सैर-सपाटे और रक्तदान शिविरों जैसे सेवा कार्यक्रमों का आयोजन करता है।

बांग्ला भाषा और साहित्य सोसायटी (सिंगापुर)

सिंगापुर में बांग्ला भाषा का शिक्षण समुदाय के कुछ उत्साही सदस्यों की पहल के माध्यम से 1980 के दशक के अंत में शुरू हुआ। वर्ष 1994 में सिंगापुर सरकार ने स्थानीय शिक्षा प्रणाली की

आवश्यकता को पूरा करने के लिए बांग्ला (चार अन्य दक्षिण एशियाई अल्पसंख्यक भाषाओं में से) को दूसरी भाषा के रूप में मान्यता दी। दूसरे शब्दों में, छात्रों को अब पीएसएलई, 'ओ' और 'ए' स्तर की परीक्षाओं में दूसरी भाषा के रूप में बांग्ला लेने की अनुमति है। उसी वर्ष, बांग्ला भाषा और साहित्य सोसायटी (सिंगापुर), बीएलएलएस की आधिकारिक तौर पर स्थापना की गई, ताकि इसके मुख्य उद्देश्यों में से एक के रूप में बांग्ला भाषा और साहित्य को बढ़ावा दिया जा सके, और इसकी सदस्यता के स्कूल जाने वाले बच्चों को औपचारिक शिक्षा देना शुरू किया। इसके निम्न उद्देश्य हैं-

- बंगाली भाषा के अध्ययन और उपयोग को बढ़ावा देना।
- बंगाली साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रायोजित और बढ़ावा देना।
- उन लोगों के लिए सुविधाएं प्रदान करना और उनकी साहित्यिक और सांस्कृतिक रुचियों को बढ़ावा देना जिनकी मातृभाषा बांग्ला है।
- बंगाली भाषा और साहित्य को बढ़ावा देने के लिए वार्ता, व्याख्यान, बहस, चर्चा, संगोष्ठी या सेमिनार आयोजित करना।
- प्रासंगिक क़ानूनों के प्रावधानों के अनुपालन के अधीन शैक्षिक कक्षाएं आयोजित और संचालित करना।
- उपरोक्त वस्तुओं के प्रचार-प्रसार के लिए किसी पुस्तक, पत्र-पत्रिका को मुद्रित करना, प्रकाशित करना, बेचना या वितरित करना।
- दान, उपहार आदि के माध्यम से सोसायटी के उद्देश्यों के लिए आवश्यक धनराशि स्वीकार करना।
- सोसायटी के प्रयोजनों के लिए संबंधित प्राधिकारी के अनुमोदन से धन जुटाना, जिस तरीके से प्रबंधन समिति उचित समझे।

ओडिया सोसाइटी ऑफ़ सिंगापुर

ओडिया सोसाइटी ऑफ़ सिंगापुर, सिंगापुर में गठित एक गैर-राजनीतिक, गैर-लाभकारी और स्वैच्छिक समुदाय है। सिंगापुर में रहने वाले उड़िया लोगों के बीच उड़िया अपनापन पैदा करने के लिए उड़िया प्रवासियों के एक छोटे समूह द्वारा वर्ष 1998 में सिंगापुर में इसकी स्थापना की गई थी। सिंगापुर में ओडिया समुदाय का मुख्य फोकस सदस्यों की उद्देश्यपूर्णता, शैक्षिक, बौद्धिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर और जीवन के सभी पहलुओं में ओडिया समुदाय को बढ़ावा देना और बढ़ाना है। सिंगापुर की ओडिया सोसाइटी सिंगापुर और विदेशों में ओडिया लोगों के लिए एक संसाधन केंद्र बनने और सिंगापुर में ओडिया विरासत और संस्कृति के ज्ञान और परंपराओं को बढ़ाने के लिए बौद्धिक और

शैक्षिक सामग्री को बढ़ावा देने का प्रयास करती है और सिंगापुर में रहने वाले ओडिया प्रवासियों को सामाजिक गतिविधियों के लिए एक अवसर प्रदान करती है। अपने ओडिशा कनेक्शन को बनाए रखने के लिए एकत्रित हो रहे हैं। सिंगापुर की ओडिया सोसायटी हर साल निम्नलिखित सामाजिक, खेल और मनोरंजक समारोहों का आयोजन करती है।

- उत्कल दिवस ओडिशा राज्य के जन्म को याद करने का मुख्य आयोजन है।
- गणेश पूजा हाथी के सिर वाले भगवान गणेश के सम्मान में मनाई जाती है।
- राजा, होली, दीपावली जैसे अन्य त्यौहार भी मनाये जाते हैं।
- खेल और मनोरंजक कार्यक्रम, जैसे बैडमिंटन प्रतियोगिता, लंबी दूरी की बाइकिंग, शतरंज कोचिंग इत्यादि।

सिंगापुर कैराली कला निलयम (एस०के०के०एन०)

सिंगापुर कैराली कला निलयम (एस०के०के०एन०), सबसे पुराने गैर-लाभकारी भारतीय संगठनों में से एक है, जिसका गठन वर्ष 1956 में मुख्य रूप से सिंगापुर गणराज्य में भारतीय निवासियों के बीच भारतीय संस्कृति, ललित कला और खेल को बढ़ावा देने के लिए किया गया था। द्वितीयक उद्देश्य अन्य कल्याणकारी समाजों या सामाजिक संगठनों की सहायता करना था, जिनका उद्देश्य सामाजिक कल्याण या भारतीय संस्कृति और ललित कला को बढ़ावा देना है। स्थानीय प्रतिभाओं के बिना शर्त समर्थन और अथक प्रयासों से, एस०के०के०एन० सिंगापुर और मलेशिया में लगभग 250 नाटकों का मंचन करने में सक्षम हुआ। इसके अलावा, केरल के प्रमुख नाटक मंडलों को एस०के०के०एन० द्वारा सिंगापुर में अपने उत्कृष्ट नाटकों का मंचन करने के लिए आमंत्रित किया गया था। एस०के०के०एन० को स्वतंत्र सिंगापुर की पहली राष्ट्रीय दिवस परेड का हिस्सा बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

निष्कर्ष

सिंगापुर का प्रवासी भारतीय समाज उत्तर और दक्षिण का मेल है। आधुनिक सिंगापुर के विकास में भारत तथा भारतीयों का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। आधुनिक सिंगापुर की नीव रखने से लेकर आजतक भारतीयों ने सिंगापुर को विकसित करने में पुरी कर्मठता से सहयोग किया है। प्रवासी भारतीय समूह सिंगापुर के समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, राजनीति का अहम हिस्सा हैं। सिंगापुर के पूर्व प्रधानमंत्री ली कुआंन का कहना था किं “भारत के योगदान, भारतीयों के मेहनत तथा उधमशीलता के बिना हम गरीब होते”। वहीं, पूर्व विदेशमंत्री जॉर्ज ये ने सिंगापुर को कलकत्ता की बेटी की संज्ञा दी है।

संदर्भ ग्रंथ-

[1]दिनकर, रामधारी सिंह, 1956, संस्कृतिक के चार अध्याय, 160

[2]अमीना, ए० आर० एम०, मेरीकाब, ए० एम०, 2014, दी रोल ऑफ दी केलिंग ड्यूरिंग दी 15th सेंचुरी मलक्का सल्तनत, प्रोसीडिंग ऑफ 2nd इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस इन हुमिनिटीस, सोशल साइंस एण्ड ग्लोबल बिजनेस मैनेजमेन्ट, 59-64

[3]वही

[4]ल्यू, ए० वाई०, दी बर्थ एण्ड इवाल्यूशन ऑफ मलक्काज इंडियन पर्राकान्स (दी चेट्टि), ए रिसर्च डॉक्यूमेंट ऑन इट्स आइडेंटिटी, ट्रेडिसन एण्ड कल्चर हैरिटेज, 03

[5] Stanford Raffles, Carrer and Contribution to Singapore, Singapore Infopendia, https://www.eresoures.nib.gov.sg/infopedia/articles/SIP_715_2004_12_15.html.

[6]बकले, सी० वी०, 1984, एन एनेकडोटल हिस्ट्री ऑफ ओल्ड टाइम्स इन सिंगापुर, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, सिंगापुर, 79-87

[7]दास, एस० तथा भट्टाचार्य, एस०, इंडिया एण्ड सिंगापुर: फिफ्टी ईयर ऑफ डिप्लोमेसी रिलेशन इंडियन फ़ॉरेन अफेयर्स जर्नल, जनवरी-मार्च, 2020, वॉल्यूम 15, नं० 01, 16-32

[8]राय, राजेश, 2006, इन, लाल, ब्रिज बी०, रिव पीटर तथा राजेश राय, दी एसाइक्लोपीड़िया ऑफ दी इंडियन डायस्पोरा, सिंगापुर डिडायर मिलेट, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर, 176

[9] लिटल इंडिया: इंडिया एण्ड कोसमोपोलिटेन: 05, https://hsse.nie.edu.sg/staff/blackburn/serangoonroadlittleindia.pdf.

[10] वही

[11]सिंधु, आर० एस०, 2017, (सं), सिंगापुर्स अर्ली सिख पाइनियर्स, सिंगापुर: गुरुद्वारा बोर्ड, 23

[12]सेंसश ऑफ पापुलेशन, 2020, स्टैस्टिक्स रिलीज 01, डेमोग्राफी, कैरेक्टस्ट्रीक एजुकेशन। लैंग्वेज एण्ड रिलीजन, डिपार्टमेंट ऑफ स्टैटिक, सिंगापुर

[13] वही

[14]योंग, एम० सी०, राव, वी० वी० बी० (सं), 1995, सिंगापुर- इंडिया रिलेशन : ए प्राइमर, फिलाडेल्फिया : कोरोनेट बुक्स इंक, 09

[15] आनंद, ए० एस०, 2014, इथिनिक बिजनेस : मेनस्ट्रीम एण्ड आउट साइडर ट्रेडिशन ऑफ तमिल इन्टरप्राइनेयोरशिप, प्रोसीडिंग ऑफ जाफना यूनिवर्सिटी इंटरनेशनल रिसर्च कॉन्फ्रेंस, 04

[16]उमादेवी, एस०, हिस्ट्री ऑफ मनी ड्यूरिंग ब्रिटिश एरा : ए केस ऑफ चेट्टीयार्स एस मेजर मनी लैंडर, https://repo.uum.edu.my/14511/1/27.pdf

[17]ए०, पुनिथ, 2016, नट्टुकोट्टई 'चेट्टियार्स : बिजनेस प्रेक्टिस एण्ड प्रस्पेक्टिव, पीएचडी थीसिस, पुंडीचेरी यूनिवर्सिटी, पुंडीचेरी, 143

[18]यादव, एस० एन०, 2005, जर्नल ऑफ ओवरसिज इंडियंस : लेबर टू इन्वेस्टर वॉल्यूम 01, नई दिल्ली, ग्लोबल विजन पब्लिशिंग हाउस।